ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 164-166

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

# राम गोपाल विजयवर्गीय एवं भूर सिंह शेखावत के चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन

1. सूर्य प्रकाश
2. डॉ0 अलका तिवारी

1. सहा0 अध्यापक– एम0एम0एच0 कालेज, गाजियाबाद, 2. एसो0 प्रोफे0 चित्रकला विभाग, एन0 ए0 एस0 कालेज, मेरठ, समन्वयक– ललित कला विभाग, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, भारत।

Received-17.06.2022, Revised-22.06.2022, Accepted-26.06.2022 E-mail: sp994959@gmail.com

***सारांशः–*** *स्वर्गीय रामगोपाल विजय वर्गीय एवं भूर सिंह शेखावत आधुनिक राजस्थानी चित्रकला के दो सतंभ है। विजय वर्गीय एवं शेखावत जी सर्वथा भिन्न विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते है। विजय वर्गीय जी भारतीय कला परंपरा के आदर्श से युक्त है तो वही शेखावत जी यूरोपीय कला सौंदर्य और कला पद्धति से प्रभावित है। दोनों ने अलग–अलग लोक का सृजन किया है। एक ने बुद्धि के कल्पना लोक को अपना अभिधेय माना तो दूसरे ने लोक जीवन के यथार्थ में सौंदर्य दर्शन किए। वर्गीय जी को काव्य के भावपूर्ण प्रसंगो के चित्रण में आनंद प्राप्त हुआ तो शेखावत जी को दैनिक जीवन के श्रम और विनोद ने आकर्शित किया। विजय वर्गीय जी ने वाश पद्धति में रेखा प्रधान तथा कल्पनाशील चित्रों से और भूर सिंह शेखावत जी ने प्रभाववादी रंग पद्धति में तैल विधा के यथार्थवादी चित्रों के माध्यम से भारतीय चित्रकला कोश को समृद्ध किया है।*

***कुंजीभूत शब्द– राजस्थानी चित्रकला, भारतीय कला परंपरा, यूरोपीय कला सौंदर्य, यथार्थवादी चित्रण, काल्पनिक चित्रण।***

भारतीय कला को सदैव से ही राजस्थानी कला ने अपने लालित्य और सम्मोहन से अलंकृत किया है। ऐतिहाकि दृष्टि से 16वीं से 19वीं सदी की राजस्थानी चित्रकला अपनी विभिन्न उपषैलियों की मौलिकता ओर सौदंर्य के कारण भारतीय कला में अपना विशेष स्थान रखती है। वसली पर बनाए छिन्न चित्रशैली की दृष्टि से शुद्ध भारतीय है। गतिशील, सशक्त, अलंकारिक, बारीक तथा भावपूर्ण रेखांकन, संगत एवं सजीव केंद्रीय संयोजन, सतरंगी रंग विधान एवं रंगों के विभिन्न तानों के प्रयोग और एक–स्वा चश्म चेहरों की बनावट आदि सभी में राजस्थानी चित्रकला भारतीयता की पोषक रही है। नायिका भेद, बारहमासा, राग–रागिनी, पशु पक्षी, मानवी सुख–दुख से रागात्मक संबंध रखने वाली चेतन सत्ता के रूप में प्रकृति, जन सामान्य, विभिन्न धार्मिक ग्रंथों और काव्य के चित्रण में राजस्थानी चित्रकल भारतीय चित्रकला में स्वर्णिम अध्याय की तरह है।

कला देश काल के सापेक्ष विविधता और परिवर्तनशीता को स्वीकार करते हुए अग्रसर रहती है। यह परिवर्तन कलाकारों के सामाजिक, राजनीतिक, धर्मिक, औद्योगिक आदि घटनाकमों के प्रति सजग और सहजीवी रहने के कारण होता है। राजस्थानी चित्रकार भी अपने परिवेश के प्रति जागरूक रहे है। राजनीतिक परिवर्तन और यूरोपीय चित्र शैली के प्रभाव के कारण 19वीं शताब्दी के अंत तक राजस्थनी चित्रकला में आये एक अंतराल के बाद शैलेन्द्र नाथ डे के आगमन के साथ ही राजस्थनी चित्रकला में पुनर्जागरण देखने को मिलता है। उनके शिष्य स्वर्गीय राम गोपाल विजय वर्गीय ने उनकी परंपरा को आगे बढ़ाने में अपना पूर्ण सहयोग किया। तत्पष्चात अनेक चित्रकार जैसे भूर सिंह षेखावत, मोनी सन्याल, देवी देवकीनंदन शर्मा, कृपाल सिंह शेखावत, गोवर्धन लाल जोशी, राम जैसवाल, परमानंद चोयल, द्वारका प्रसाद शर्मा, बी.सी. गुई, र.वि. सखालकर आदि कलाकारों ने राजस्थनी कला को नया यौवन प्रदान किया तथा राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राजस्थनी चित्रकला को नई पहचान दिलायी।

राष्ट्रीय स्तर पर आधुनिक राजस्थानी चित्रकला को जिन प्रमुख चित्रकारों ने स्थापित किया उनमें रामगोपाल विजय वर्गीय और भूर सिंह षेखावत अन्यंत उल्लेखनीय हैं। यद्यपि की प्राविधि, विषय और शैली की दृष्टि से दोनों ही चित्रकारों में पर्याप्त विविधता है परंतु उनके चित्रों के सम्मोहन में कोई लधुता नजर नहीं आती है।

अपने गुरू से प्राप्त परंपरागत भारती कला के ज्ञान को आधार मानकर कला साधना करने वाले स्वर्गीय राम गोपाल विजयवर्गीय जी राजस्थानी चित्रकला के नीले आसमान में ऐसे सितारे की तरह हैं जिनके प्रकाश से आज भी राजस्थनी चित्रकला अलंकृत है।

राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले के 'बालेर' में रामगोपाल विजय वर्गीय का जन्म सन् 1905 में हुआ था। विजय वर्गीय जी में कला के प्रति लगाव बचपन से था। जीवन यापन के लिए अपरिहार्य आर्थिक आवश्यताएं भी इन्हें सृजन के मार्ग से विरक्त नहीं कर सकी। वर्गीय जी ने कला शिक्षा राजस्थन स्कूल आफ आर्ट्स में शैलेन्द्र नाथ डे के निर्देशन में प्राप्त किया तथा इस संस्थान में शिक्षक और प्रिंसिपल के रूप में सेवाएं भी दी। सन् 2003 मे विजय वर्गीय जी का स्वर्गवास जयपुर में हुआ।

यद्यपि रामगोपाल विजयर्गीय जी कई माध्यमों और प्राविधियों में सिद्धहस्त थे परंतु उन्होंने अपने सृजन के लिए वॉश पेंटिंग, टेंपरा को ही प्राथमिकता दी और इस माध्यम और शैली में नए कीर्तिमान स्थापित किए। विजय वर्गीय जी ने वॉश विधि को

**अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

अपनी इच्छा अनुसार प्रयोग किया जिसके फलस्वरूप इनके चित्रों में वॉश पद्धति का धुंधलापन कम दिखाई देता है तथा टेंपरा के संयमित प्रयोग से चित्रों में चमक और आकर्षण है।

विजयवर्गीय जी के चित्र रेखा प्रधान हैं। वह रंगों की अपेक्षा रेखाओं पर अधिक केंद्रित हैं, जो उन पर अजंता ओर बंगाल शैली के चित्रों के प्रभाव के कारण है। उनकी रेखाएं प्रवाहमय हैं जिसमें लय और गति स्वाभाविक रूप से निर्बाध दिखाई देती है। उनकी चंचल, मोहनी रेखाओं के कारण रीता प्रताप जी ने उनहें रेखात्मक रोमांसवादी कहा है। विजय वर्गीय जी की रंग योजना सरस और सादगी युक्त है। उनके रंग कहीं धूमिल तो कहीं चमकदार हैं परंतु वह कभी भी आंखों में चुभते नहीं हैं। उनके चित्रों में प्रायः एक रंग की प्रधानता देखने को मिलती है जो उनके चित्रों में मुख्य रंग या प्रभावी रंग की तरह प्रयुक्त हुआ है। इसके अतिरिक्त नीला रंग उनके स्वभाव के ज्यादा समीप जान पड़ता है जिसके विभिन्न तानों का प्रयोग वह अपने चित्रों में किए हुए है।

रामगोपाल विजय वर्गीय जी ने पौराणिक, धार्मिक कथा, जयदेव, तुलसीदास के काव्य के साथ ही सामान्य जनजीवन को चित्रण विषय के रूप में चुना। उनके चित्रों की आत्मा सदैव भारतीयता से ओतप्रोत रही है। उनके प्रमुख चित्रों में गोपियों के साथ कृष्ण, उमर खय्याम की चित्र श्रृंखला, पुष्कर मेले में, बस स्टैंड, मदारी खेत में, पनघट की ओर, तांगा वाला, सुबह का संगीत, अभिज्ञान षाकुंतलम, रामयण चित्र–श्रृंखला, इंद्रजीत विजय आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

विजय वर्गीय जी का चित्र संयोजन व्यक्ति प्रधान रहा है। उनके चित्र में नारी सौंदर्य नए प्रतिमान के साथ चित्रित है। नारी के रूप लावण्य का चित्रण उनका अभीष्ट रहा है। नारी की त्रिभंग देहयस्टि, काले घने बाल, अधर खुले, उन्मीलित नेत्र, तीखी नासिका, उभरे वच्छस्थल, उन पर उमड़ते उत्तरीय, सुसज्जित आभूषण, हस्त मुद्रा में संगीत व नृत्य की अद्भूत लयात्मकता आदि सब में उन्होंने भारतीय षड़गं का पालन करने की सफल कोशिश की है। जहां अधिकाश चित्रों में नारी को सम्माननीय और सम्मोहनीय के रूप में दिखाया है तो कुछ चित्रों में उन्होंने अबला नारी और उसके दुखमय जीवन को भी चित्रित किया है।

विजयवर्गीय जी को अनेक कला सम्मानों जैसे 1970 में कलाविद क उपाधि तथा 1984 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित किया गया। केंद्रीय एवं राजस्थन ललित कला अकादमी ने उन पर मोनोग्राफ भी प्रकाषित किए है। राजस्थान की चित्रकाला में स्वर्गीय भूर सिंह शेखावत एक नवीन अध्याय के रूप में दर्ज है। भूर सिंह ने चित्रकला में वहां के जनमानस और राजस्थानी परिवेश को यथार्थवादी दृष्टिकोण से नवीन सौंदर्य प्रदान किया।

भूर सिंह शेखावतत का जन्म सन् 1914 ईस्वी में राजस्थान के बीकानेर जिले के 'धों–धलिया' ग्राम में हुआ था। बिरला परिवार की सहायता से इन्होंने जे.जे.स्कूल आफ आर्ट्स से कला शिक्षा ग्रहण किया। तत्पश्चात राजस्थान के 'पिलानी' को अपना कर्मभूमि बनाया और आजीवन यहीं रहकर इन्होंने सृजन किया। सन् 1966 में भूर सिंह शेखावत जी का रक्त कैंसर के कारण देहावसान हो गया।

भूर सिंह जी जल रंग और तैल चित्रण दोनों में पारंगत थे। इन्होंने जल रंग की परंपरांगत शैली को नहीं स्वीकार किया ओर जल रंग को भी तैल विधा की तरह प्रयोग कर उस पर सफेद रंग का पैच लगाकर टेंपरा जैसा प्रभाव उत्पन्न किया है। तैल विधा में इन्होंने पैच विधि में काम किया है जिससे उनके रंगों की ताजगी आज भी बरकरार है। अपारदर्शी तैल रंग ओर ग्वाचे आदि पर उनकी मजबूत पकड़ के कारण ही उनके रंगों में निर्मलता नजर आती है। तूलिका संचालन की उनमें अद्भूत क्षमता थी।

भूर सिंह जी ने काल्पनिक विषय की जगह राजस्थान के लोक जीवन को अपने चित्रण विषय के रूप में चुना। भूर सिंह प्रथम ऐसे चित्रकार थे जिन्होंने राजस्थान के जन जीवन की दैनिक गतिविधियों को अपनी जीवंत कला में अत्यंत सादगी के साथ प्रमुखता दी थी। राज्य के लोक जीवन की जितनी सफल और प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति भूर सिंह शेखावत जी के चित्रों में हुई उतनी हमें अन्यत्र कहीं दिखाई नहीं देती। उनका कथन है 'हमारे चित्रकारों ने कल्पना लोक को झरोखों से झांक–झांक कर काफी देखा है। अब कुछ समाज का भी सहवास उन्हें करना चाहिए।' शेखावत जी राजस्थन के गांव–गांव में घूमे और उन्होंने वहां के जीवन का गहराई से अध्ययन किया। इसलिए प्रकृति के अंकन में भी राजस्थन और विशेषता पिलानी के आस पास का परिवेश उनके चित्रों में दृष्टिगत होता है। शेखावत जी राजसी जीवन या पौराणिक कथाओं की अपेक्षा राजस्थन के श्रमिक वर्ग के स्त्री–पुरूष को अपने चित्रों का विषय बनाया। उनके चित्र इतने संजीव और आकर्षक बन पड़े हैं कि उनके सौंदर्य पर मोहित हुए बिना दर्षक नहीं रह पाता है। इसलिए कला समीक्षकों से लेकर प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू तक उनके चित्रों के प्रशंसक रहे हैं। शेखावत जी व्यक्ति चित्रण में अत्यन्त निपुण थे। देश के कई महान विभूतियों एवं स्वतन्त्रा संग्राम सेनानियों के व्यक्ति चित्र शेखावत जी ने बनाये। उनके कुछ प्रमुख चित्र इस प्रकार है– आरा चलाते हुए खाती, वृद्ध

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

बुनकर, छूरी चलाते लुहार, चरखा कातती स्त्री, सौदा करते ग्रामीण नर नारी, सब्जी बेचती हुई मालिन, जुलाहा, राजपूत व्यक्तिक की शान आदि। भूर सिंह जी ने अपने चित्रों की प्रदर्शनी कर देश विदेश में राजस्थनी संस्कृति को प्रसिद्धि दिलायी। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं एवं कला समीक्षकों ने उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा की है।

राम गोपाल विजयवर्गीय तथा भूर सिंह शेखावत दोनों ही चित्रकार के साथ–साथ सहृदय कवि भी थे। एक ओर जहां विजय वर्गीय जी चित्रकला ओर काव्य की रचना प्रकिया के साम्य में देखते हैं तो वहीं भूर सिंह शेखावत जी की कविताएं उनके भावुक मन ओर आशावादी दृष्टिकोण को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है।

वर्गीय जी वाश शैली में पौराणिक कथाओं को आधार बनाकर काल्पनिक रूपों को साकार किए हैं तथा अजंता और बंगाल शैली के चित्रों की भारतीय चित्र परंपरा को विकसित करने का सराहनीय प्रयास किया है। वर्गीय जी ने अपनी कला साधना से आगामी कई चित्रकारों को प्रेरणा दी तो वहीं भूर सिंह शेखावत जी ने परंपरागत जल रंग चित्रण को अस्वीकार कर यूरोपियन प्रभावावादी रंग पद्धति से प्रभावित होकर अपने चित्रों में विविध रंग, छाया–प्रकाश का संयोजन किया है। भूर सिंह जी ने सामान्य लोक जीवन को विशय बनाकर यथार्थवदी चित्रण किया है।

**निष्कर्ष–** रामगोपाल विजयवर्गीय भारतीय कला दर्शन ओर भूर सिंह जी पश्चिमी सौंदर्य दर्शन से प्रभावित थे। वर्गीय जी एवं शेखावत जी यद्यपि समकालीन थे फिर भी दोनों के सृजन का स्वरूप अलग–अलग है परंतु उनका मूल भारतीय ही है। वर्गीय जी और भूर सिंह जी एक चमन के दो अलग पुष्प वृक्ष हैं जिनके फूलों का रंग, आकार और सुगंध कुछ ऐसी है कि उनसे आकर्षित हुए बिना कोई नहीं रह पाता है। वर्गीय जी के चित्रों में काव्य की लयात्मकता और मधुरता है तो भूर सिंह जी के चित्रों में विस्मित करने वाला आकर्षण और राजस्थनी मिट्टी की सुगंध है। वर्गीय जी के चित्रों में काव्य, पौराणिक कथाओं आदि का तो भूर सिंह शेखावत जी के चित्रों में राजस्थनी लोक जीवन के दैनिक गतिविधयों का चित्रण है। वर्गीय जी और शेखावत जी के चित्रों ने भारतीय कला में नये आयाम स्थपित किये तथा भारतीय ओर राजस्थानी चित्र परंपरा को उन्नत किया।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रताप, डॉक्टर रीता भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास राजस्थन हिंदी ग्रंथ अकादमी।
2. वर्मा, अविनाश बहादुर भारतीय चित्रकला का इतिहास प्रकाश बुक डिपो।
3. अग्रवाल, डॉक्टर गिरिराज किशोर आधुनिक भारतीय चित्रकला संजय पब्लिकेशन आगरा।
4. "Ram Gopalvijayvargiya" en.m.wikipedia.org January2008.
5. Gautam Radhaballabh "Bhoorsingh Shekhavat" Rajasthan Lalit Akadmi; Jaipur1987 exoticindiaart.com.
6. "special exhibition brochure" Agust 2011 nuga-arthouse.com.
7. Kalavritt.blogpost.com.

*****